सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का अष्टम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम स्व. श्री बलराम स्वामी न्यायाचार्य विरचित ''तस्मै श्रीगुरवे नमः'' गुरु के प्रति आत्म समर्पण एवं गुरु महिमा की दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट रचना है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'गुरुपूर्णिमा के अवसर पर महिमा गुरु की' लेख में गुरुपूर्णिमा के महत्त्व के साथ साथ व्यास पूर्णिमा को ही गुरुपूर्णिमा कहने का रहस्य प्रतिपादित किया गया है। इसके पश्चात डॉ. नारायण शास्त्री काङ्कर ने ''पुनः पुनर्नमस्तेऽस्तु'' संस्कृत कविता में गुरु से अज्ञान विनाश एवं लोककल्याण की अपेक्षा प्रस्तुत की है। इसी क्रम में प्रो. वैद्य बनवारी लाल गौड़ द्वारा लिखित ''आचार्यः शास्त्राधिगमहेतूनाम्'' लेख में गुरुत्व का ऐतिह्य तथा आयुर्वेद ग्रन्थों में वर्णित गुरु शिष्य सम्बन्ध की परम्परा को प्रस्तुत किया गया है। तद्नन्तर धीरेन्द्र कुमार स्वामी द्वारा लिखित ''गुरु की महिमा'' लेख श्री दादूजी महाराज के गुरु विषय उद्गारों को प्रस्तुत करता है। गुरु के कर्त्तव्यों का प्रतिपादन अत्यन्त प्रेरणास्पद है। इसके अनन्तर प्रो. ताराशंकर शर्मा पाण्डेय द्वारा विरचित 'रुद्राष्टकम्' अभिनव संस्कृत विधा हाईकू के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। जिसमे भगवान् शिव के लिंगस्वरूप का वर्णन किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा